शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'

जन्मतिथि- 17.03.1963
जन्मस्थान - देवली, (टोंक)
पिता का नाम- स्व रामनारायण जी अग्रवाल
माता का नाम- श्री मती मनोहर देवी
मोबाइल नम्बर -9462654500

खूब उँलीचो प्रेम घट,जीवन है अनमोल।
रिश्तों में रस घोलते,शहद-पगे दो बोल।
शहद-पगे दो बोल, हरे है सारी पीड़ा।
अब तो दृग-पट खोल,मार नफरत का कीड़ा।
मन-आँगन के बीच, घृणा रेखा मत खींचो।
नहीं करो अब देर,प्रेम-घट खूब उँलीचो।।

****

तन-मन पर जितने चुभे,विपदाओं के शूल।
उतना खिलता ही गया,जीवन रूपी फूल।
जीवन रूपी फूल, महकता ही रहता है।
हो सबकुछ अनुकूल,किला दुख का ढहता है।
मुखरित होता हर्ष,चहक उठता मन-उपवन।
खूब करो संघर्ष,खिलेगा अपना तन-मन।।

****

आह्लादित तन-मन हुआ,कर ममता का पान।
छंदों से वन्दन करूँ, इतना देना ज्ञान
इतना देना ज्ञान,मुझे हे!वीणापाणी।
तज कर निज अभिमान,रखूँ अनुशासित वाणी।
पाकर माँ का नेह,हुआ जीवन आच्छादित।
पाकर प्रेम-पुनीत,हृदय होता आह्लादित।

****

रीते -घट भर प्रेम से,हो नफरत का नाश।
मावस को रोशन करे,जगमग दीप-प्रकाश,
जगमग दीप प्रकाश,सजी दुल्हन-सी मुँडेरे।
निज-आँगन में आज,करें खुशियाँ पग-फेरे।।
मन में है विश्वास,तभी तो हम सब जीते।
करे प्रेम का ह्रास,वही रहते है रीते।

****

आज निभाएँ प्रीत हम,नफरत जाए हार।
जगमग होंगे घर तभी,दीप जले हर -द्वार।
दीप जले हर-द्वार,तमस पल में है हारा।
जगमग है संसार, हुआ चहुँ-दिश उजियारा।
हुई व्याधि सब खत्म,सभी मिल मौज मनाएँ।
प्रेम-भाव की रस्म, चलो हम आज निभाएँ।।

****

परिवर्तन से ही खिले,जग में मधुरिम-फूल।
मान सको तो मान लो,जीवन का यह मूल।
जीवन का यह मूल,जिन्दगी महका देता।
तूफ़ानों के बीच,तभी मंजिल पा लेता।
चले समय के साथ, विपद का करता मर्दन।
शकुन वहीं हो नित्य, देहरी पर परिवर्तन।

****

नाता श्रम से जोड़ कर,भी रहता लाचार।
माँ को नित्य पुकारता,रखकर आस कुम्हार।
रखकर आस कुम्हार,चाक फेरे रोजाना।
खूब करे मनुहार,रमा जी निज-घर आना।
रूखा-सूखा भोग,ग्रहण कर लेना माता।
बनाकर सुखद-योग,जोड़ना मुझसे नाता।।

****

कैसे-कैसे लोग हैं,कैसा यह संसार?
भूले अपनों को सभी,कर दौलत से प्यार,
कर दौलत से प्यार,एक दिन सब पछताते।
पाते कष्ट अपार,द्वार ईश्वर के जाते।
रोज करें विष-पान,तिजोरी में भर पैसे।
विपद पड़े जब आन,पार पाएँ अब कैसे??

****

बहके कदमों से कभी,पार न लगती नाव।
अटके है मझधार में,जिस मन में भटकाव।।
जिस मन में भटकाव,वही खाता है ठोकर।
निशि-दिन खाता ताव,बुद्धि अपनी वो खोकर।
रिसने लगते घाव,मार काँटों की सहके।
होता नहीं भराव,'शकुन'तन-मन भी बहके।।

****

अनदेखा करता पिता, बेटे की करतूत।
मर-मर कर जीता सदा,सहकर कष्ट-अभूत।
सहकर कष्ट-अभूत,रात-दिन घुटता रहता।
अधरों पर धर मौन,किसी से कब कुछ कहता।
साथ लगे भी कौन,भाग्य का सारा लेखा।
निकला पूत कपूत,करे सबको अनदेखा।।

****